अध्याय ६

"अपने अपने अजनबी : नामकरण"

अध्याय : 6

अपने अपने अजनबी - नामकरण

भूमिका :-

किसी भी कृति के नामकरण के संबंध में कृतिकार को अत्यधिक सजग रहना पडता है। किसी भी कृति के नामकरण पर पाठक की रोचकता अवलंबित होती है। नामकरण यदि आकर्षक हो तो पाठक अपने आप ही उस कृति की ओर आकृष्ट होता है। नामकरण इसप्रकार का होना आवश्यक है कि वह कथ्य को प्रस्तुत करनेवाला हो। किसी भी कृति के वर्ण्यविषय या कथ्य और उसके नामकरण में संगति होनी आवश्यक है तभी पाठक और समीक्षक उस कृति को पढने में रूचि लेता है। यदि उसप्रकार की संगति नहीं होती तो पाठक और समीक्षक कृतिकार की अवहेलना करने लगते हैं। इसप्रकार की कृति कुछ समय तक तो लोकप्रियता प्राप्त कर लेती है, लेकिन ज्यादह दिनों तक वह महत्त्वपूर्ण नहीं बन पाती।

कहने का तात्पर्य यहीं है कि, यदि किसी कृति के नामकरण से पाठक के मन में भ्रम उत्पन्न होता है तो वह उस कृति के समान अन्य कृतियों की भी उपेक्षा करने लगता है। साथ ही उसे इस बात का भी ध्यान रखना पडता है कि जिसप्रकार सामान्य व्यवहार में स्त्री-पुरूष के नामकरण एवं उनकी आकृति या गुणों में विषमता के कारण जो "आँखो के अन्धे और नाम नैन सुख", "नाम बड़े और दर्शन थोड़े" तथा "पास कानी कौड़ी नहीं और करोड़ीमल" आदि लोकोक्तियाँ प्रचलित हो गयी हैं उसी प्रकार किसी भी कृति का नामकरण ऐसा न किया जाय

कि समीक्षकों को उसके गुण-वैपरीत्य को लेकर किसी भी प्रकार की टीका-टिप्पणी करने का अवसर मिल सके।"[1] आकर्षक शीर्षकवाली कृति ही पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। अनाकर्षक शीर्षकवाली कृति पाठक की दृष्टि से उपेक्षित रह जाती है। किसी कृति का नामकरण यदि आकर्षक हो तो वह पाठक को उस कृति की ओर आकृष्ट करने के साथ-साथ उस कृति के कृतिकार के गहन ज्ञान का भी परिचय कर देता है। साधारणतः किसी भी कृति की रचना करते समय विभिन्न आधारों का आश्रय कृतिकार लेता है। उन्हीं आधारों पर अपनी कृति का नामकरण कर लेता है।

साधारणतः निम्नलिखित प्रकार से कृतियों का नामकरण किया जाता है। -

1· कृति नायक के नाम पर,

2· कृति नायिका के नाम पर,

3· कृति उद्देश्य के आधार पर

4· मुख्य घटना के आधार पर

5· मुख्य घटना के घटित होने के स्थान के नाम पर

6· लाक्षणिक अथवा व्यंजनात्मक शीर्षक । आदि

उपर्युक्त आधारों का उदाहरणोंसहित स्पष्टीकरण का परिचय हम यहाँ प्राप्त करेंगे।

1· **कृति नायक के नाम पर :-**

रामचरित मानस, सुजानचरित, शेखर; एक जीवनी, नहुष और स्कन्दगुप्त आदि कृतियों का नामकरण नायक के नाम पर आधारित किया गया है।

2· **कृति नायिका के नामपर :-**

निर्मला, ध्रुवस्वामिनी, चित्रलेखा, कामायनी, दिव्या, उर्वशी, सुनीता, कल्याणी और सुखदा आदि कृतियों का नामकरण नायिकाओं के नाम के आधारपर हो हुआ है।

3· **कृति उद्देश्य या मूल भाव के आधारपर :-**

साथ ही कृति के उद्देश्य या मूलभाव के आधारपर कुछ कृतियों का नामकरण किया गया है। उदाहरण स्वरूप भारत दुर्दशा, सेवासदन, प्रेमाश्रम और मैला आँचल आदि रचनाओं का नाम लिया जा सकता है।

4· **मुख्य घटना के आधारपर :-**

मुख्य घटना के आधारपर नामकरण की गयी कृतियों में सिन्दूर की होली, जौहर, त्यागपत्र एवं जयद्रथ वध आदि उल्लेखनीय हैं।

5· **मुख्य घटना के घटित होने के स्थानपर :-**

साकेत और कुरूक्षेत्र आदि कृतियों का नामकरण मुख्य घटना के घटित होने के स्थानपर आधारित है।

6· **लाक्षणिक अथवा व्यंजनात्मक शीर्षक :-**

जहाज का पंछी, नदी के द्वीप, शहर में घूमता आईना और चाँदनी के खंडकर आदि कृतियों का नामकरण लाक्षणिक और व्यंजनात्मक प्रणाली के द्वारा किया गया है। यहाँ स्मरणीय बात यह है कि, मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने बहुधा लाक्षणिक और व्यंजनात्मक नामकरण करने की प्रणाली ही अपनायी है।

नामकरण के बारे में इतना सारा परिचय प्राप्त कर लेने के बाद अब हम यहाँ यह देखेंगे कि, अज्ञेय के "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का नामकरण कौनसे आधारपर किया गया है। और वह पूर्णतया उपयुक्त एवं सार्थक है या नहीं ।

"अपने अपने अजनबी" के नामकरण की सार्थकता :-

साधारणतः अज्ञेय के इस "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का नामकरण पूर्णतः उपयुक्त एवं सार्थक है। "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का नामकरण दो आधारोंपर किया गया है। एक तो वह लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक है साथ ही साथ वह कृति के उद्देश्य या मूलभाव के आधारपर हुआ है। "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का मूल उद्देश्य यही है कि, मृत्यु की भयंकरता व्यक्ति में महान परिवर्तन ला देती है और प्रियजन भी अजनबी हो जाते हैं। तथा अनपहचाने अजनबी व्यक्ति भी अपने आत्मीय बन जाते हैं यह दिखाना। उसीप्रकार से अज्ञेय का भी यही प्रयास रहा है। उन्होंने "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में यही स्पष्ट करना चाहा है कि, "मृत्यु को सामने पाकर कैसे प्रियतन भी अजनबी हो जाते हैं और अजनबी एक-एक पहचाने हुए तथा कैसे इस चरम स्थिति में मानव का सच्चा चरित्र उभर कर आता है।"[2] पूरे उपन्यास में इसी उद्देश्य को चित्रित करने का अज्ञेय का प्रयास रहा है। योके और सेल्मा के मृत्यु के साक्षात्कार संबंधो अनुभवों को चित्रित किया गया है।

"अपने अपने अजनबी" उपन्यास में योके और सेल्मा ये दोनों प्रमुख पात्र हैं। सेल्मा बर्फीली पहाड़ियों में एक काठ के बंगले में रहती है और योके संयोगवश वहाँ आ जाती है और अचानक बर्फीले तूफानों के कारण बर्फ के नीचे वह काठ का बँगला दब जाता है। अतः सेल्मा और योके इस बर्फ के नीचे दबे काठघर में बन्दी हो जाती हैं। यह एक विचित्र संयोग ही है कि, दोनों एक-दूसरे के लिए अपरिचित होते हुए भी बर्फ के तूफान में घिरे काठ घर में कुछ समय तक एक साथ रहना पडता है। योके एक तरूणी है और सेल्मा बुढिया है, अतः दोनों की आयु, मनोदशा और दृष्टिकोण में पर्याप्त अन्तर होते हुए भी दोनों को एक साथ रहना पडता है। उनमें से योके को सेल्मा की मृत्यु भी देखनी पडती है। साथ ही उसे सेल्मा का अन्तिम संस्कार भी करना पडता है। इतना ही नहीं तो सेल्मा का अंन्तिम संस्कार करने के बाद वह उस बर्फ के नीचे

दबे काठ़घर से मुक्ति पा लेती है और अपने प्रेमी पॉल को ढूँढने के लिए विवश हो जाती है। लेकिन जर्मन सिपाहियोंद्वारा उसका सतीत्व भंग किया जाता है और उसे वेश्या बना दिया जाता है। वह ऐसी जिंदगी से उब चुकी थी और वह मृत्यु को स्वीकार करने के लिए बाध्य होती है और आत्महत्या करती है तथा एक अजनबी की बाहों में अपना दम तोड़ देती है। मृत्यु का क्षण योके के जीवन में भी आता है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि, अज्ञेय ने "अपने अपने अजनबी" इस उपन्यास में इस बात की ओर संकेत किया है कि, इस समाज में परिचित और अपरिचित का अन्तर ढूँढना सहज बात नहीं है। बहुत बार अपने जितना साथ नहीं देते उतना साथ अपरिचित व्यक्ति दे देते हैं। बहुत बार ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती है कि अजनबी परिचित से या अपनों से अधिक घनिष्ठ जान पड़ते हैं। और परिचित व्यक्ति उतना स्नेह नहीं दिखा पाते। अपनों से इस स्नेह की अपेक्षा अधिक रहती है। सच बात यह है कि, इस मानव सृष्टि में किसी न किसी रूप में सभी एक दूसरे के लिए अजनबी ही हैं और वे परस्पर अजनबी जैसा व्यवहार भी करते हैं। "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में बहुत बार उपन्यास के नामकरण का अर्थ बता देनेवाले वाक्यों का प्रयोग हुआ है। किसी न किसी प्रसंग में ऐसे वाक्यों का प्रयोग हुआ है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि, उपन्यासकार का मूल उद्देश्य किस तथ्य का उद्‌घाटन करना रहा है। इस सम्बन्ध में "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में आये हुए कुछ वाक्यांश उदाहरण के रूप में दिये जा सकते हैं। वह निम्नलिखित अनुसार हैं -

1. "मैंने चुना। हम अजनबी नहीं चुनते, अच्छे आदमी चुनते हैं। मैंने आदमी चुना - अच्छा आदमी। उसमें मैं जियूँगी। नाथन्, मुझे माफ कर दो।"[3]

2. "कौन है यह अजनबी जो इस तरह चिल्लाता हुआ और इशारे करता हुआ उसकी ओर बढ़ रहा है।"[4]

3. "मैंने चाहा था कि अन्तिम दिनों में कोई मेरे पास न हो। लेकिन वह भी क्या मैं चुन सकी? तुम क्या समझती हो कि इससे मुझे तकलीफ नहीं होती कि जो मैं अपनों को भी नहीं दिखाना चाहती थी उसे देखने के लिए - भगवान ने एक-एक-अजनबी भेज दिया।"[5]

4. "आंटी सेल्मा इन बातों का नहीं सोच सकती, नहीं तो मैं उससे इस बारे में बात करती। उसके जीवन में कुछ है जो कि इन सब बातों से बिलकुल अलग है। वह मेरे लिए अजनबी है, लेकिन लगता है उसमें कुछ ऐसा सच है जो मैंने नहीं जाना है। मेरे सच से बिलकुल अलग और दूसरा सच।"[6]

5. "स्तब्ध भीड़ में केवल एक ही बूढे व्यक्ति को सूझा कि हाथ उठाकर रस्मी ढंग के क्रूस का चिन्ह बना दे, वह चिन्ह सूने आकाश में अजनबी सा टँका रह गया।"[7]

6. "कहीं वरण की स्वतंत्रता नहीं है। हम अपने बन्धु का वरण नहीं कर सकते - और अपने अजबनी का भी नहीं ---- हम इतने भी स्वतंत्र नहीं है कि अपना अजनबी भी चुन सकें। अजनबी, अनपहचाना डर --- क्या हम इतने भी स्वतंत्र है कि अजनबी से पहचान कर लें?"[8]

7. "---- अच्छा, तुम आग जला लो, फिर मेरे पास बैठो, बहुत-सी बातें करेंगे। मैं तो अजनबी डर की बात कह गयी अभी तो हम तुम भी अजनबी से हैं, पहले हम लोग तो पूरी पहचान कर लें।"[9]

8. "मैंने उसे सहारा देने की कोशिश की, लेकिन उसने हाथ के इशारे से मुझे रोक दिया। उस अत्यन्त दुर्बल हाथ में आज्ञापन का कुछ ऐसा बल था कि मैं उसे छू न सकी, उसके पास भी न जा सकी। जैसे फिर क्षणभर में हम दोनों अजनबी हो गये।"[10]

9. "नये साल के दिन जब मैंने फिर सबेरे - सबेरे सेल्मा को गाते सुना तो मुझे क्रोध हो आया। सबेरे किसी तरह अपने पर जोर डालकर मैंने औपचारिक ढंग से उसे नये साल की बधाई दे दी और उसकी बधाइयों के लिए धन्यवाद दे दिया। फिर उसके बाद दिन भर हम लोग कुछ अजनबी से रहे।"[11]

10. "बुझे हुए बन्द चेहरे, मानो घर की खिड़कियाँ ही बन्द न कर ली गयी हो बल्कि परदे भी खींच दिये गये हों, दबी हुई भावनाहीन पर निर्मम आवाजें, मानों जो माँगती हो उसे जंजीर से बाँध लेना चाहती हो। अजनबी चेहरे, अजनबी आवाजें, अजनबी मुद्राएँ और वह अजनबीपन केवल एक दूसरे को दूर रखकर उससे बचने का ही नहीं है, बल्कि एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने की असमर्थता का भी है - जातियों और संस्कारों का अजनबीपन, जीवन के मूल्य का अजनबीपन।"[12]

उपर्युक्त सभी उदाहरणों का अनुशीलन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि, "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में प्रारम्भ से अंत तक बहुत बार "अजनबी" शब्द का प्रयोग हुआ है और साथ ही साथ वे शब्द उपन्यासकार के किसी न किसी उद्देश्य की पुष्टि करते हैं। "अपने अपने अजनबी" यह नामकरण सार्थ लगता है। आरम्भ से अन्त तक अज्ञेय ने अपने उद्देश्य को सिध्द करने का प्रयास किया है। नामकरण की दृष्टि से हम ऊपर्युक्त दिए गए उदाहरणों की विस्तृत ब्यौरेवार पहचान करेंगे।

पहले उदाहरण में मृत्यु के पूर्व योके द्वारा व्यक्त हुए उद्‌गारों को उद्‌धृत किया गया है। इन पंक्तियों में योके ने जगन्नाथन् से कहा है कि, प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ के लिए अच्छा आदमी चुनता है और कोई भी अजनबी का साथ नहीं चाहता।

दूसरा उदाहरण "सेल्मा" नामक खंड से उद्धृत किया गया है और योके जब मृत सेल्मा को बर्फ में दफनाने के बाद घर लौटने लगती है तक एकाएक उसे किसी के दूर से पुकारने की आवाज सुनाई देती है और ऐसा जान पडता है कि, कोई उस ओर आ रहा है। इसी प्रसंग से यह उदाहरण सम्बन्धित है और यहाँ योके की मनोभावनाओं का संकेत दिया हुआ है कि यह कौन अपरिचित है जो इसप्रकार उसे आवाज देता हुआ संकेत करता हुआ उसकी ओर बढ़ रहा है।

तीसरा उदाहरण योके की डायरी के पृष्ठों से संबंधित याने कि 5 जनवरी की घटना से ही सम्बन्धित है और इन पंक्तियों में योके ने सेल्मा की मनोभावनाओं का उल्लेख करते हुए कहा है कि सेल्मा को यह उचित नहीं जान पडा कि, योके उसके सामने बार-बार उसकी बीमारी की चर्चा करें। इसीलिए वह योके से कहती है कि वह यही चाहती थी कि उसकी यह दशा उसके सम्बन्धी भी न देखें पर संयोग कुछ ऐसा हुआ कि भगवान ने उसको यह दशा देखने के लिए एक अजनबी भेज दिया।

चौथा उदाहरण भी योके की डायरी के पृष्ठों से उद्धृत किया गया है और 21 दिसम्बर को डायरी लिखते समय योके ने समय को एक प्रवाह माना है पर वह इस प्रवाह को क्षण का प्रवाह मानती है। साथ ही वह अनुभव की भाषा में क्षण उसे मानती है जिसमें अनुभव तो है पर जिसका इतिहास नहीं है और जो शुध्द वर्तमान है तथा संसार से मुक्त है। यहाँ यह ध्यान में रखना होगा कि योके सेल्मा को एक ऐसा पात्र मानती है जिसे वह अब तक नहीं समझ पायी। अत एव योके ने इस उदाहरण में सेल्मा को अपने लिए अजनबी माना है और वह यह भी स्वीकार करती है कि सेल्मा, का दृष्टिकोण उसके लिए सर्वथा अपरिचित है। सेल्मा और योके साथ-साथ रहते हुए भी एक दूसरे से अजनबी ही हैं।

पाँचवा उदाहरण "अपने अपने अजनबी" उपन्यास के अन्तिम परिच्छेद से लिया गया है। इस उदाहरण में उपन्यासकार ने योके की मृत्यु के पश्चात का प्रसंग अंकित करते हुए कहा है कि, जब जगन्नाथन् ने भीड से बतलाया कि योके मर गयी तब उस स्तब्ध भीड़ से केवल एक ही बूढ़े व्यक्ति को सूझा कि वह हाथ उठाकर रस्मी ढंग से क्रूस का चिन्ह बना दे। उपन्यासकार अज्ञेय का कहना है कि उस बूढ़े ने क्रूस का वह चिन्ह तो बनाया परन्तु वह चिन्ह शून्य आकाश में अजनबी सा टँका रह गया। वर्तमान युग मे धार्मिक चिन्ह भी अजनबीपन से मुक्त नहीं है यह तात्पर्य है।

छठा उदाहरण दूसरे उदाहरण से सम्बन्धित है और इन दोनों उदाहरणों में यही स्पष्ट किया गया है कि व्यक्ति किसी को अपनाने के लिए पूर्णतः स्वतन्त्र नहीं है और वह न तो स्वतन्त्रतापूर्वक अपने बन्धु को ही अपना सकता है और न किसी अपरिचित का चयन कर सकता है। साथ ही अजनबी से एक प्रकार का अपरिचित भय होना भी स्वाभाविक है और हम किसी अजनबी से पहचान करने के लिए भी स्वतन्त्र नहीं है। इसप्रकार इन दोनों उदाहरणों में पुनः अजनबी के सम्बन्ध में विभिन्न भावनाओं का चित्रण हुआ है।

सातवे उदाहरण में बर्फ के तूफान में बर्फ के नीचे दबी भयभीत योके से आंटी सेल्मा ने यही स्पष्ट करना चाहा है कि, जो भय अजनबी हो, उस भय से डरना उचित नहीं है और अभी तो हम दोनों ही एक दूसरे को नहीं पहचानते अतः उचित तो यही होगा कि पहले हम लोग एक दूसरे से पूर्णतया परिचित हों।

आठवाँ उदाहरण 5 जनवरी की घटना से सम्बन्धित है और इसमें योके ने यह संकेत किया है कि उसने सेल्मा को सहारा देना चाहा पर सेल्मा ने उसे रोक दिया और क्षणभर में वे दोनों अजनबी हो गये। इसप्रकार इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है, योके और सेल्मा दोनों साथ रहते हुए भी एक दूसरे को अजनबी ही समझते हैं।

नवाँ उदाहरण भी योके की डायरी के पृष्ठों से उद्धृत किया गया है और 5 जनवरी को डायरी लिखते समय योके अपने इस बर्फ के नीचे दबे काठ्घर में बीत रहे जीवन की एकरूपता एवं एकरसता से व्यथित जान पडती है। साथ ही उसे अब जीवन की लालसा भी बहुत कम रह गयी है और मृत्यु का भय, उसके हृदय का आक्रोश दिन प्रतिदिन बढाता जा रहा है। यही कारण है कि नव वर्ष के दिन वह सेल्मा को गाते देखकर क्रुध्द हो उठती है और औपचारिक ढंग से उसे बधाई देती है तथा सेल्मा भी उसे धन्यवाद देती है पर इस घटना के बाद दोनो दिन भर अजनबी ही रहते हैं। इसप्रकार एक काठ्घर में कई दिनों से साथ-साथ रहने के बाद दोनों का अजनबी सा रहना वैयक्तिक दृष्टिकोण की भिन्नता का ही परिचायक है।

दसवाँ उदाहरण "अपने अपने अजनबी" के तीसरे और अंतिम खण्ड से उद्धृत है तथा इस अंतिम खंण्ड के प्रारम्भ में उपन्यासकार अज्ञेय ने योरोप के किसी ऐसे नगर के बाजार का वर्णन किया है जहाँ जर्मनों ने अपना आधिकार स्थापित किया था। अत एव जर्मनों कं आतंक के कारण गली की दूकाने भी बहुधा बन्द रहती थी और जब वे खुलती थी तब वहाँ बहुत अधिक भीड़ हो जाती थी। इसी प्रसंग से संबंधित इस दसवें उदाहरण में उपन्यासकार अज्ञेय ने यह संकेत करना चाहा है कि उस दिन गली की उस दूकान में बहुत भीड़ थी पर सभी अपने आपको अकेला ही अनुभव करते थे और वे एक दूसरे के प्रति अजनबी व्यक्तियों का सा आचरण कर रहे थे। उपन्यासकार का कहना है कि उक्त व्यक्तियों का अजनबीपन न केवल एक दूसरे को दूर रखने के लिए था बल्कि वे एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने में असमर्थ भी थे।

निष्कर्ष :-

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि, "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का नामकरण सर्वथा उपयुक्त और व्यंजनात्मक है। वह इस उपन्यास के उद्देश्य के साथ पूर्ण संगति भी रखता है। इस सम्बन्ध में राजमल बोरा का मत इसप्रकार है कि, "अपने अपने अजनबी" में जिन स्थितियों में उपन्यास के पात्रों को रखा गया है, उन स्थितियों में कौन अपना है और कौन अजनबी है, इसकी पहचान हो जाती है। अपने भी अजनबी हो जाते हैं और अजनबी भी अपने हो जाते हैं। स्थिति मृत्यु से साक्षात्कार की है। इस समय सबको अपने प्राण की रक्षा की चिन्ता होती है। ऐसे समय में प्रियजन भी अजनबी सा व्यवहार कर सकते हैं और अजनबी भी अपना सा व्यवहार कर सकते हैं। मानवीय मूल्यों की सही पहचान इसी समय में होती है।" इसप्रकार से पूरे उपन्यास में उपन्यासकार के उद्देश्य को सफलता मिली है। और उपन्यास में कई स्थलों पर "अजनबी" शब्द की आवृत्ति करा दी गई है। और पाठकों को कृति की ओर आकृष्ट करा दिया है। अतः नामकरण की दृष्टि से "अपने अपने अजनबी" उपन्यास सफल बन पडा है। "अपने अपने अजनबी" यह शीर्षक सार्थक सिध्द हुआ है।

सन्दर्भ :-

1·	अज्ञेय का उपन्यास साहित्य -	डॉ·दुर्गाशंकर मिश्र सं·1976, पृ·48
2·	अपने अपने अजनबी	अज्ञेय आवरण पृष्ठ
3·	अपने अपने अजनबी	अज्ञेय प्रथम संस्करण, पृ·126
4·	वहीं -	पृ·113
5·	वहीं -	पृ·4
6·	वहीं -	पृ·24
7·	वहीं -	पृ·127
8·	वहीं -	पृ·114
9·	वहीं -	पृ·16
10·	वहीं -	पृ·50
11·	वहीं -	पृ·43-44
12·	वहीं -	पृ·118